अरुणाचल प्रदेश की मिकिर जनजाति की एक झलक

सिमरन कुमारी

उत्तर में तिब्बत एवं चीन, पूर्व में वर्मा (म्यांमार) तथा दक्षिण में असम तथा पश्चिम में भूटान से घिरा अरुणाचल वस्तुतः उगते हुए सूर्य के अंचल के रूप में प्रसिद्ध है। पूर्व में इसका नाम 'नेफा' (नॉर्थ ईस्ट फ्रंटियर एजेंसी) था। नेफा को 20 जनवरी, 1972 ई. को केंद्रशासित प्रदेश का दर्जा मिला और नेफा के स्थान पर अरुणाचल प्रदेश नाम रखा गया। अरुणाचल प्रदेश को 20 जनवरी, सन् 1987 ई. को पूर्ण राज्य का दर्जा मिल गया। इस राज्य की राजधानी ईटानगर पापुमपारे जिले में है। अरुणाचल प्रदेश पर्वतों, नदियों, घाटियों, वृक्ष- लताओं से परिपूर्ण, हरीतिमा, बिखेरती सुरम्य भूमि है। यहाँ की जनजातियां अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है।

अरुणाचल प्रदेश की प्रमुख जनजातियां 26 हैं और उपजनजातियां सौ से भी अधिक हैं। प्रमुख जनजातियां हैं- न्यीशी, गालो, आदि, आपातानी, तागिनी, मोनपा, नोक्ते, वांग्चू, ख़ाम्ती, मेंबा शेरदुकपेन, आवा, और सिंग्फो आदि है। इन जनजातियों में से एक मिकिर जनजाति है जिनका जिक्र अरुणाचल में बहुत कम होता है। मिकिर जनजाति की एक झलक, मिकिर का अर्थ 'मेकर' से लिया गया है। जिसका शाब्दिक अर्थ 'मानव या स्वजाति' है। मिकिर भाषा तिब्बत बर्मन समूह से संबंधित है। मिकिर जनजाति के लोग अरुणाचल में बहुत पहले से रहते हैं। जब अरुणाचल का नाम नेफा था तभी से ही ये जनजाति अरुणाचल में निवास करते हैं। मिकिर जनजाति के लोग कहां से आए कब आए ये कहना बहुत मुश्किल है क्योंकि इनका कोई लिखित इतिहास नहीं है इस समाज की अभिव्यक्ति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी मौखिक रूप में की गई।

असम में मिकिर जनजाति को 'कार्बी जनजाति' के नाम से जाना जाता है, पर अरुणाचल में 'मिकिर जनजाति'। मिकिर शब्द कार्बी भाषा का शब्द नहीं है इसलिए मिकिर के बजाए वह अपने आप को 'आलैंग' पुकारना अधिक पसंद करते हैं। कुछ लोगों का कहना है कि 'मिक्रि' नाम की राजकुमारी का विवाह 'नांगा' राजकुमार के साथ हुआ था और राजकुमार राजकुमारी के नाम का सही उच्चारण नहीं कर पाए तो मिकिर कह कर पकारते। इसी से मिकिर की जनजाति पूर्वोत्तर के राज्यों में जाकर बस गए। ये जनजाति असम के मुख्य जनजातियों में से एक है। पर आजकल यह जनजाति अरुणाचल में निवास करती है और अरुणाचल की जनजातियों में गिनी जाती है। 2011 की जनगणना के अनुसार इन जनजातियों की जनसंख्या 1000 तक थी, इस कारण ये जनजाति अलग-अलग धर्मों में परिवर्तित हो रहे हैं।

अनुसूचित जनजाति संशोधन अधिनियम 1950 के अनुसार पापुमपारे जिले के चेसा, कोकिला, बालिजान, गूम्तो, होलोंगी और तरासो में निवास कर रहे हैं।

All arunachal Pradesh mikir welfare society (APMWS) के प्रथम स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते हुए स्थानीय विधायक 'नाबाम रिबिया' 12 जनवरी, 2018 में कहा- "मिकिर अरुणाचल प्रदेश की एक स्वदेशी जनजाति है। आइए हम सब मिलकर मिकिर जनजाति के प्रति सहानुभूति रखें और साथ मिलकर चलने की अपील करें उन्हें अरुणाचल प्रदेश में अनुसूचित जनजाति का प्रमाण पत्र देने की मांग करें।"

मिकिर जनजाति के लोग पितृवंशी समाज की तरह है तथा इस जनजाति के पांच वंशज समूह है। इस प्रकार - 1:लिजांग - इंग्ती। 2 : हान्जांग तेरांग। 3 : इजंग- इंची। 4 : क्रोजंग - तेरोन। 5 : तुनजुंग - तिमुंग।

उपर्युक्त जनजातियों के समान वंशज में विवाह नहीं होती हैं, बल्कि अलग-अलग वंशज समूहों में होती हैं। मिकिर जनजाति धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है, क्योंकि इनकी जनसंख्या बहुत कम है। लोग इनके बारे में बहुत कम जान पा रहे हैं और बहुत सी जनजाति इन जनजातियों के बारे में बहुत गहराई से नहीं जान पातीं। इनका अभी लिखित इतिहास उपलब्ध नहीं है, लेकिन वर्तमान समय में इन जनजातियों के ऊपर बहुत से लेख, आलेख और कार्यक्रम के आयोजन से इन जनजातियों से परिचित हो रहे हैं। ये जनजातियों का व्यवहार बहुत ही सरल और स्वाभाविक होता है।

मिकिर जनजाति की एक झलक निम्न बिंदुओं के द्वारा देखी जा सकती है- 'जीवन शैली से संबंधित अवधारणाएँ

रहन सहन

मिकिर जनजाति के लोग सरल और सादा जीवन पारंपरिक ढंग से निभाते हैं। इस समुदाय के लोग बहुत ही शांत स्वभाव, मददगार और मिलनसार होते हैं। इस समुदाय में किसी भी तरह के कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं तो उसमें पूरा गांव निस्वार्थ भाव से एकजुट होकर मदद के तैयार हो जाते हैं, चाहे वह विवाह से संबंधित हो (आदाम-आसार), घर बनाना हो (हेम कीकीम) पूजा अर्चना करनी हो (चार्यदान) जन्मोत्सव मनाना हो (आमाहांग केथेक) सब में पूर्ण रूप से सहयोग करते हैं।

इस जनजाति की स्त्रियां गृहस्थ जीवन के साथ-साथ बच्चों को पीठ पर बांधकर पुरुषों के साथ झूम खेती करने जाती हैं और पुरुषों को हर क्षेत्र में पूर्ण रुप से सहयोग करती हैं पर आज धीरे-धीरे शिक्षा और विज्ञान के विकास के साथ-साथ स्त्रियां भी हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं, अध्ययन-अध्यापन, लेखन, सरकारी सेवा (नौकरियों) और राजनीतिक क्षेत्रों में भी आगे बढ़ रही हैं। इस जनजाति के लोग बहुत कम शिक्षित होते हैं क्योंकि इनके पास इतनी सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन वर्तमान समय में सरकार इनके लिए बहुत सी सुविधाएं उपलब्ध करा रही है, जिस कारण यह अध्ययन क्षेत्र में बहुत आगे बढ़ रहे हैं और हर तरह के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। आज वर्तमान समय में स्त्रियां पुरुषों के समान आ गई हैं जो काम पुरुष कर रहे हैं वो काम आज स्त्रियां भी कर रही हैं। स्त्रियां आज अपनी पहचान स्वयं बना रही हैं। इस जनजाति में स्त्रियों के लिए कोई बंधन नहीं है जैसे चाहे वैसे रह सकती हैं खुलकर स्वतंत्र रूप से वह अपना घर गृहस्थी और बाहर के कार्यों को अच्छे से निभाती हैं और सभी लोग मिल-जुलकर रहते हैं। इस

जनजाति के लोग यानी स्त्री और पुरुष दोनों ही बहुत मेहनती होते हैं। शारीरिक रूप से बहुत काम करते हैं। इस जनजाति में स्त्री- पुरुष में कोई भेद नहीं है। दोनों समान रूप से स्वतंत्रता के साथ एक दूसरे का हाथ बंटाते हैं। अपने खेती-बाड़ी का पूरा काम अपने भाई-बंधु के साथ मिलकर करते हैं। अभी मिल-जुलकर रहते हैं और सादा जीवन व्यतीत करते हैं।

खान-पान

मिकिर जनजाति के पारंपरिक भोजन बाँस में पकाकर खाने की परंपरा है। इसे मुख्य भाषा में 'किमुंग' कहते हैं। बांस के अंदर चावल को पत्तों में लपेटकर थोड़ा पानी डालकर आग में पकाया जाता है, जिसको 'किमुंग' कहते हैं। बाँस में केवल चावल ही नहीं बल्कि मांस, मछली और तरह-तरह के जंगली पत्तों को, सब्जियों को पकाकर खाते हैं जिसे 'ऑक किंमुग' और हरी पत्तियों (साग) को, सब्जी को केवल पानी में नमक डालकर उबालकर भी खाते हैं जिसे 'उपथोर' कहते हैं। इस समाज के लोग बाँस में बनाया हुआ भोजन और उबाला हुआ हरी पत्तियों को बड़े ही चाव के साथ खाते हैं। इस तरह के भोजन को मैंने भी एक बार ग्रहण किया है, बहुत ही स्वादिष्ट होता है। भोजन के साथ-साथ चावल से बना हुआ मदिरा का भी पान करते हैं जिसे 'आराक या होरालांग' कहते हैं पर आजकल मदिरा के स्थान पर चाय या शरबत देने की परंपरा हो गई है।

चावल से बनी हुई कई तरह की मिठाइयां, पीठा को स्वयं बनाते हैं, जिसे 'हम्बी', 'हिंम', 'ट्रंप्लोप' कहते हैं। इस तरह के भोजन, मदिरा और मिठाइयों को विवाह, उत्सव और विभिन्न तरह के कार्यक्रमों में बड़े ही चाव के साथ इसका पान करते हैं पर जैसे-जैसे समाज परिवर्तन होता गया, वैसे-वैसे इन जनजातियों के खान-पान में भी थोड़ा बहुत परिवर्तन हुआ है।

वेशभूषा

मिकिर समाज में पुरुषों और स्त्रियों के लिए वेशभूषा अलग - अलग है। इस समाज में शादी-शुदा पुरुष के लिए अलग पोशाक है और जो शादी-शुदा पुरुष नहीं हैं, उसके लिए अलग पोशाक है। जैसे शादी-शुदा पुरुष 'चौई आंग' नामक जैकेट पहनते हैं और जो पुरुष शादी-शुदा नहीं हैं वह 'चौई ईक', 'चोई कैलोक' और 'चौई उमसो' नामक पोशाक पहनते हैं और कमर में धोती पहनते हैं जिसे 'पैरों लैंग' या रिकौंग कहते हैं। सिर पर पगड़ी के समान वस्त्र पहनते हैं जिसे 'पोहो' कहते हैं। इसी प्रकार चौपान, बोजारू, आनी पैलू, आदि वस्त्र पुरुषों के लिए है।

स्त्रियों के लिए मुख्य-पिनी (गाले) जो कमर में पहनती हैं तथा उसके साथ एक वामकोक (फीता) लगाती है, 'पैकोक 'और' पीबा 'शरीर के ऊपरी भाग को ढकने के लिए पहनती हैं और साथ ही इन पोशाकों के साथ कई तरह के पारंपरिक आभूषण भी पहनती हैं। जैसे चवन्नी- दुअन्नी, मोतियों की तरह-तरह के 'लेकधोन',

'हिकी' (माला) पहनती हैं और लैक इयो, लैक रूवै, लैक पाइकौम, लैक जिंगजिरी, रैंक बोग्होंम आदि को पहनती हैं।

कलाई में रोई सुरों, साग्ती, आरी अलैक (चुड़ी), कान में आनैथेंपी (झुमका), रूप बोनंदा (अंगूठी) आदि को अनिवार्य रूप से स्त्रियां पहनती हैं।

इन सभी आभूषणों का जिक्र मिकिर जनजाति के लोकगीतों में देखने को मिलता है। मिकिर समाज के लोग सरल और सादगी जीवन को अपनाते हैं।

जन्म संबंधी अवधारणाएं

मिकिर जनजातियों में लड़के या लड़की के जन्म में कोई भेदभाव नहीं मानते। दोनों को बराबर के नजरिए से देखते हैं। जब किसी बच्चे का जन्म होता है तो माँ 1 महीने तक बच्चे को घर में रखती है। एक महीने बाद नामकरण के लिए मंदिर जाती और नामकरण होने के बाद सभी गाँव वालों को भोज कराते हैं।

बच्चों के जन्म से संबंधित कुछ मांगलिक कार्य जैसे- 'आराम किक' मामा के द्वारा बच्चों को पहली बार मुंडन कराना भी होता है। 'दुईक्राई', 'निहु केदाम' मामा के द्वारा पहली बार बच्चों को भोजन कराना। मिकिर जनजातियों में पारंपरिक ढंग से मांगलिक कार्यों को करते हैं। विवाह से संबंधित अवधारणाएं

मिकिर जनजातियों मे सुसंगत विवाह (Arrange marriage) और प्रेम विवाह (love marriage) दोनों स्वतंत्र रूप से होता है और विवाह के लिए किसी भी प्रकार से दहेज प्रथा की बात नहीं होती है जिसके पास जितना होता है वह अपने बेटियों को देकर उसका निर्वाह करते हैं। इन जनजातियों में विवाह बहुत ही पारंपरिक ढंग से मिल-जुलकर संपन्न कराया जाता है।

मिकिर जनजातियों में विवाह को 'आदाम-आसार' कहते हैं। मिकिर जनजातियों में एक लड़का और एक लड़की को विवाहित जोड़ा घोषित करने से पहले छः नियमों का पालन करना पड़ता है। जैसे- पहले नियम को 'नेग्पी नेग्सो काचिंकी' कहते हैं। अर्थात लड़के की माँ को लड़की की माँ से मिलना होता है और विवाह का विचार रखते हैं। एक लड़का केवल बाहर की कबीले की लड़की से ही विवाह करता है जो कि उसके मामा की बेटी होती है। माना जाता है कि दोनों महिलाओं के बीच 'काचिछूत' नामक गीतों के माध्यम विवाह की बातचीत होती है। लड़के की माँ लड़की के घर जाते समय 'आराक' (मदिरा) अनाज, पान-सुपारी उपहार के रूप में देते हैं।

दूसरे नियम को 'पिसो केहांग' कहते हैं। इस चरण के दौरान विवाह प्रस्ताव को औपचारिक रूप से लड़की के पिता लड़के के पिता से मिलने जाते हैं और गाँव के कुछ चुनिंदा लोग भी साथ में होते हैं। लड़के के परिवार वाले लड़की के पिता को 'बोंगक्रूक' (लौकी को भीतर के गूदे को निकालकर उस खोखले से लौकी सुखा कर बोतल की तरह बनाकर उसमें मदिरा भर कर लाते हैं।) जिसे सफेद कपड़े से ढककर लाते हैं।

सबसे पहले मदिरा लड़की के पिता को दिया जाता है इसके बाद चाचा, भाई, मामा फिर गाँव के मुखिया को मदिरा पेश करते हैं और अंत में मेहमानों को, ठीक इसी तरह दूसरी ओर महिलाओं को भी उपहार और मदिरा दिया जाता है। शुरूआत लड़की के माँ से होती है, अगर दोनों परिवार विवाह के लिए राजी है तो लड़की की माँ लड़की को शगुन के तौर कुछ उपहार (वस्त्र, आभूषण, पान-सुपारी) देती है, जिसे 'सिम किबी' भी कहते हैं।

तीसरे नियम को 'कापातिनी' कहते हैं। इस नियम के अनुसार लड़की के परिवार वाले विवाह की अंतिम सहमति के लिए दोबारा लड़के के घर पहले की तरह उपहार लेकर जाते हैं। दोनों परिवार के लोगों की मौजूदगी में लड़की से प्रश्न किया जाता है। अगर उत्तर 'हां' होता है तो उपहार और मदिरा दिया जाता है। इस उपहार को 'असीम' कहते हैं और इसके बाद ईश्वर को पहला चढ़ावा चढ़ाया जाता है। सभी को भोजन ग्रहण कराते हैं।

चौथे नियम को 'आजो अरनी केफा' कहते हैं। इस नियम के अंतर्गत लड़के के परिवार वाले लड़की के घर आकर विवाह की तिथि तय करते है। दुल्हन के घर जाने से पहले परिवार के पूर्वजों का आह्वान किया जाता है और उन्हें प्रसाद दिया जाता है। पांचवें नियम को 'लुन किलुन' कहते हैं। जिसके अंतर्गत विवाह के दिन लड़की के तरफ से एक गायक होता है जो विवाह के गीत गाता है उसी तरह लड़की के तरफ से भी एक गायक होता है जो विवाह के गीत गाता है।

छठे नियम को 'पेसो रिसो कान्चेथोन कहते हैं। इस नियम के अंतर्गत में दुल्हन विवाह के बाद खाना और मदिरा बनाती है और परिवार के सभी लोगों को परोसती और सफेद रंग का कपड़ा भी बनाती। शादी के 3 सप्ताह बाद दूल्हा और दुल्हन अपने कुछ दोस्तों के साथ दुल्हन के घर जाते हैं और फिर दुल्हन कपड़े वापस करती है और मदिरा, सुपारी-पानं आदि को उपहार के रूप में दुल्हन के माता-पिता को देते हैं। अंत में दोनों एक साथ भोजन करते हैं और साथ में प्रस्थान करते हैं। और अपने गृहस्थ जीवन को खूबसूरत बनाते हैं। इस तरह से में मिकिर जनजातियों में 6 नियमों के साथ ही विवाह संपन्न होता है।

भाषा शैली

मिकिर जनजाति के बोलचाल की भाषा के रूप में मिकिर बोली का प्रयोग करते हैं। ये अपने मातृभाषा, रोमन लिपि में लिखते हैं क्योंकि इनका क्षेत्र अहिंदी भाषी क्षेत्र है। इनके सीमावर्ती क्षेत्रों में असमिया, बोडों और, टूर्टी हिंदी भाषाओं का प्रभाव है। मिकिर बोली के कुछ शब्द इस प्रकार है-

1 : स्वागत - वांग- इक- नोन

2 : मेहनती - चेपादुक

3 : भोजन-आन, मारी

4 : प्रतियोगिता - चेपाते, काचोबाई

5 : धन्यवाद - कुरूवांगथू

मिकिर जनजाति के लोग अपनी जनजातियों के साथ मिकिर बोलियों का प्रयोग करते हैं और अन्य लोगों के साथ संपर्क भाषा के रूप में वह टूटी हिंदी का प्रयोग करते हैं। इस जनजाति की बोलियों में स्त्री-पुरुष में कोई भेद नहीं होता है। जैसे- तुम कहाँ जा रहा है। (लड़का हो या लड़की दोनों के लिए एक ही शब्द का प्रयोग करते हैं।) इन शब्दों को अरुणाचली हिंदी कहते हैं। लड़का हो या लड़की दोनों को समान स्तर पर वातार्लाप करते हैं। अरुणाचल प्रदेश की सभी जनजातियों में शुद्ध हिंदी का प्रयोग बहुत कम मात्रा होता है। मिकिर जनजाति का कोई लिखित साहित्य नहीं है, मौखिक रुप से पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ती गई। पर आज वर्तमान समय में इन जनजातियों का लिखित साहित्य उपलब्ध कराई जा रही हैं और साहित्य को सुरक्षित रखने के लिए पूरा पूरा प्रयास हो रहा है।

धार्मिक संबंधित अवधारणाएं

मिकिर जनजाति के लोग धार्मिक मान्यताओं, मूल्यों, विश्वासों, परंपराओं एवं संस्कृति के प्रति अधिक लगाव रखते हैं। मिकिर जनजाति की धार्मिक मान्यताएं, मूल्य, आस्था- विश्वास 'जीवात्मा' पर आधारित है। जीवात्मा की यह आस्था है कि प्रकृति की सभी वस्तुओं में आत्मा (ईश्वर) वास करती है। इसलिए इन प्राकृतिक वस्तुओं की पूजा करते हैं। ये मुख्यतः प्रकृति-पूजक होते हैं।

इस जनजाति में बलि देने की प्रथा है। पर्व- त्योहार, विवाह, और अगर कोई व्यक्ति अस्वस्थ (बीमार) है उसे स्वस्थ होने के लिए भी जानवरों (मुर्गों) की बलि दी जाती है। इस धर्म की विधियों का पालन मुख्य रूप से मांगलिक कार्यों में करते हैं-

1. रोंग्कर - ये पर्व प्रत्येक साल 5 जनवरी या 5 फरवरी को गाँव की मंगलकामना और अच्छी पैदावार के लिए गाँव के सभी लोग मिल-जुलकर इस पर्व को मनाते हैं और मुर्गों की बलि भी देते हैं।

2. चूजून- प्रत्येक वर्ष में एक बार किसी एक परिवार द्वारा पूरे गाँववासियों को भोज कराया जाता है।

3. सेकार्किली - परिवार की कुशल मंगल के लिए पूजा की है।

4. चेमांगकन- परिवार के बुजुर्ग के मृत्यु पर पूरे

गाँववासियों को और अन्य गांववासियों को भोज कराया जाता है।

इन अनुष्ठानों से मिकिर जनजाति की धार्मिक एवं सांस्कृतिक-मूल्यों एवं मान्यताओं का ज्ञान प्राप्त होता है। इन जनजातियों के मौखिक लोक कथाओं के माध्यम से इनके ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक मूल्यों, जीवन- मूल्य, दर्शन और नैतिक आदर्शों को जानने को मिलता है।

आज वर्तमान समय में इन जनजातियों का कोई लिखित साहित्य नहीं है। इसलिए इन जनजातियों के बारे में बहुत गहराई से जानना बहुत मुश्किल है पर आज वर्तमान समय में मिकिर जनजाति की लिखित लोक साहित्य उपलब्ध कराई जा रही है।

संपर्क : शोधार्थी, हिंदी विभाग,

राजीव गांधी विश्वविद्यालय, ईटानगर अरुणाचल प्रदेश